classmate

Date ______
Page ______

Definations

(1-) **अलंकार** - स्वरों की नियमबद्ध रचना को अलंकार कहते है। अलंकार का अर्थ है- आभूषण या गहना।

↳ जिस प्रकार आभूषण शारीरिक शोभा बढ़ाते हैं उसी प्रकार अलंकार संगीत की शोभा बढ़ाते है।

↳ स्वरों की नियमानुसार उलट - पलट रचना को भी अंलकार कहते हैं।

↳ अलंकार चार प्रकार के होते है-

i) सरल अलंकार
ii) जटिल अलंकार
iii) उर्दू अलंकार
iv) मेरूदण्ड अंलकार

↳ अलंकार का प्रयोग -

- अलंकार का प्रयोग तान तथा सरगम में किया जाता है।
- अलंकारिक तानें - सुनने में अच्छी लगती है।
- अलंकार चारो वर्णो में बनाई जा सकती है।

(2) **वर्ण** -

- गाने की क्रिया को वर्ण कहते हैं।
- वर्ण चार प्रकार के होते है।

i) स्थायी वर्ण -

जब एक स्वर, अनेक बार गाया जाए तो उसे स्थायी वर्ण कहते है।
जैसे -ससस, रे रे रे

ii) आरोही वर्ण -
स्वरो के चढ़ते क्रम को वर्ण आरोही वर्ण कहते है। इसमे नीचे के स्वर से ऊपर के स्वर को उच्चारण किया जाता है।
जैसे - स रे ग म प ध नी।

iii) अवरोही वर्ण -
ऊँचे (ऊपर) स्वर से नीचे आने की क्रिया को अवरोही वर्ण कहते है।
जैसे - सं नी ध प म ग रे स।

iv) संचारी वर्ण -
तीनो वर्ण के मेल को संचारी वर्ण कहते है। किसी भी गायन में तीनो वर्ण अवश्य मिलेंगे। इनके बिना गायन अधुरा होता है। इसमें कोई भी स्वर ऊपर चढ़ता है, कोई भी नीचे उतरता है तथा कोई भी बार-बार उच्चारित किया जाता है।

③ कण -
- किसी भी स्वर को उच्चारण करते समय उसके आगे या पीछे के स्वर को छूना कण कहलाता है।
- कण का अर्थ है स्पर्श करना या छूना।
- कण दो प्रकार के होते है -
i) पूर्णलगन कण
ii) अनुलगन कण

i) पूर्णलगान कण - पूर्णलगान कण का प्रयोग मूल मूल स्वर से पहले किया जाता है। जैसे - ग मूल स्वर को रे स्वर का कण देना।

ii) अनुलगान कण - अनुलगान कण का प्रयोग मूल स्वर के बाद किया जाता है। जैसे - ग मूल स्वर को म स्वर का कण देना

(4) मींड - (2)
↳ किन्ही दो स्वरो को इस प्रकार गाने - बजाने को मींड कहते है जिनके बीच में कोई रिक्त स्थान न रहे।
↳ मींड लेते समय बीच के स्वरों का इस इस प्रकार स्पर्श होता है कि वह अलग - अलग सुनाई नहीं पड़ते।
↳ इसे दिखाने के लिए ऊपर उल्टा अर्ध - चन्द्राकार बनाते है।
↳ जैसे - म स, रे प, प नी
↳ मींड भारतीय संगीत की विशेषता है। इसे गाने - बजाने में लोच और रंजकता आती है।

(5) खटका - (>4)
↳ चार या चार से अधिक स्वरों को एक गोलाई बनाते हुए स्वरों के द्रुत प्रयोग को खटका कहते है।
↳ इसे लिखने के लिए स्वर को कोष्ठक में लिखते है।

जैसे - (प) गाने के लिए प म ध प
अथवा प ध प म प गाते हैं।

(6) मुर्की - (3)

↳ द्रुत गति में तीन स्वरों को एक अर्द्ध गोलाई बनाने को मुर्की कहते हैं।

↳ इसे लिखने के लिए मूल स्वर के ऊपर बाईं ओर दो स्वरों का कण लिख दिया जाता है।

जैसे - ध म
प

↳ मुर्की से गायन - वादन में रंजकता बढ़ जाती है।

↳ इसका प्रयोग अधिकतर दादरा, ठुमरी आदि में किया जाता है।

(7) गमक -

↳ स्वरों के ऐसे कंपन को गमक कहते हैं जो सुनने वाले के हृदय को सुख पहुंचाए।

↳ गंभीरतापूर्वक स्वरों का उच्चारण गमक कहलाता है।

↳ गमक के प्रयोग से संगीत में सौंदर्य भावुकता, रंजकता और आकर्षण उत्पन्न होता है।

↳ गमक का प्रयोग - ध्रुपद में किया जाता था। गमक का प्रयोग आधुनिककाल में तराने तथा छोटे ख्याल में देखने को मिलता है।

(8) <u>आलाप</u> -

- स्वरों का विस्तार आलाप कहलाता है।
- इसकी लय तानों की अपेक्षा कम होती है।
- आलाप स्वर व ताल में बंधे होते है।
- आलाप विभिन्न गायन शैलियों में प्रयोग किया जाता है।
- आलाप गाने के बीच में प्रयोग किया जाता है।
- आलाप निम्न प्रकार के होते है -

i) आकार का आलाप (More)
ii) बोल आलाप (More)
iii) नोम् - तोम् का आलाप (More)

(9) <u>तान</u> -

- स्वरों को द्रुत गति से गाने व बजाने को तान कहते है।
- स्वरों के विस्तार को भी तान कहते है।
- तानो में लयकारी का महत्व होता है। लय को तान का प्राण माना जाता है।
- ताने गीत के बीच में ली जाती है।
- ताने निम्न प्रकार की होती है -

i) <u>बोलतान</u> - जब तान के बीच में गीत के शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

ii) <u>शुद्धतान</u> - जिस तान में स्वरों का क्रम एक सा रहता है। जैसे - स रे ग म प ध नी स
सा नि ध प म ग रे सा

iii) <u>कूटतान</u> - जिस तान में स्वरों का क्रम स्पष्ट न हो।

iv) मिश्रतान - वो तान जिसमे शुद्ध तथा कूट तान का मिश्रण हो।

v) खटके की तान - जहाँ स्वरों को धक्का लगाकर तान ली जाए।

vi) झटके की तान - जब चाल दुगुन से चौगुन में अचानक बदल जाए।

vii) वक्र की तान - इसमें स्वरों का कोई क्रम नहीं होता।

viii) अचरक तान - जिस तान में प्रत्येक दो स्वर एक से बोले जाए- जैसे - सासा, रेरे, गग, ------ सासा

ix) सरोक तान - जिस तान में चार-चार स्वर एक साथ कहे जाए।

x) जबड़े की तान - जो ताने जबड़े की सहायता से ली जाती है।

xi) हलक की तान - जो ताने हलक की सहायता से ली जाती है।

xii) आलंकारिक तान -

xiii) सरल तान

xiv) सपाट तान

(10) मूर्च्छना –

↳ इसका अर्थ है मस्ती, मोहित होना, आनंद विभोर होना, आकर्षण आदि होना।

↳ अतः वह स्वरावली जिसे सुनकर सभी मोहित हो जाएं, वह मूर्च्छना कहलाता है।

↳ पं० शारंगदेव के अनुसार –
सात स्वरों का क्रम से आरोह - अवरोह करना मूर्च्छना कहलाता है।

(11) ग्राम –

↳ जिस प्रकार परिवार में लोग मिल-जुल कर रहते हैं, मर्यादा की रक्षा करते हैं, उसी प्रकार वादी - संवादी स्वरों का वह समूह, जिसमें श्रुतियाँ व्यवस्थित रूप में हो और मूर्च्छना आदि का आश्रय हो तो उसे ग्राम कहते हैं।

↳ श्रुति से स्वर और स्वर से ग्राम की रचना हुई है।

↳ ग्राम तीन प्रकार के माने गए हैं –
i) षड्ज ग्राम ii) मध्यम ग्राम iii) गंधार ग्राम

(12) दादरा –

↳ दादरा एक ताल का भी नाम है। किन्तु एक विशेष गायकी को भी दादरा कहते हैं।

↳ इसकी चाल ग़ज़ल से कुछ मिलती जुलती होती है।

↳ इसकी गती ठुमरी से तेज होती है।

↳ इसमें शृंगार रस के गीत होते हैं।

(13) <u>सादरा</u> -

↳ एक विशेष गायकी को सादरा कहते हैं।

↳ इसकी गायकी की लय भी दादरा से मिलती-जुलती है।

↳ सादरा अधिकतर कथक गायको में प्रचलित रहा है।

↳ इसमें कहरवा, दादरा, रूपक ताल का प्रयोग होता है।

↳ ठुमरी गायक भली प्रकार गा लेते हैं।

↳ इसके गीत में श्रृंगार रस अधिक मिलता है।